अध्याय- चौथा

रांगेय राघव की प्रिय कहानियों का भावपक्ष।

// अ ध्या य - चौ था //

-: रांगेय राघव की प्रिय कहानियाँ का भावपक्ष :-

१] विषय - वस्तु :-

डॉ. रांगेय राघव साहित्य के अमीर लेखक थे। वे उपन्यासकार के नाते अधिक प्रसिध्द हैं। वे कहानी सृजन में भी कम प्रसिध्द नहीं हुए हैं। उन्होंने कुल अस्सी- पच्यासी कहानियाँ लिखी हैं।

उनका " मेरी प्रिय कहानियाँ " संकलन श्रेष्ठ कहानियाँ चुनकर बनाया गया है। इसका प्रथम संस्करण सन १९७० का है जो लेखक के मरणोपरान्त छपाया गया है। लेखकने अपनी प्रिय कहानियों का लेखन सम्पूर्ण मानव का दृष्टिकोण सामने रखकर किया हैं। अत: इसे पाठक अध्ययन से समझ सकता है।

२] रांगेय राघव के प्रिय कहानी - साहित्य में भावों का द्वंद :-

डॉ. रांगेय राघव का प्रिय कहानी संकलन सायास है। उनकी प्रिय कहानियाँ विविध तरह से भावपक्षों से सम्बन्ध रखती है। इन प्रिय कहानियों के कथानकों का चुनाव डॉ. रांगेय राघवजी ने विविध भावपक्षों से किया है और उसका चित्रण भी गहराई से किया है। इन प्रिय कहानियों में सामाजिक और अन्य सभी पक्षों का अंकन किया हैं। लेखकने पात्र- चित्रण में भावों का द्वंद दिखाई देने का प्रयास किया है, जो साकार हो चुका है।

उनकी पहली प्रिय कहानी " कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेक्नीक्स " समाज के मनुष्यों के भीतर की निकृष्टता को पाठकों के सामने लाती हैं। " स्वार्थ " अहंभाव " आदि कारणों से यह कहानी प्रेरित है। स्वयं लेखक का मन्तव्य है कि, " इस कहानी का एक महत्व है। यह मनुष्य के बाहय पर जाकर सीमित नहीं हो जाती। यह युग युग का सत्य हैं। क्योंकि उसके भीतर की निकृष्ठता को बाहर खींच लाती है। [१]

" पंच परमेश्वर " में चन्दा के भावों का द्वंद्व ऐसा ही प्रकट हुआ है। जब चंन्दा की फूलों अपने पडोसी कन्हाई के घर रहती है तब

बाद में चन्दा " पंचायत " बुलाता है। पंचायत उसे न्याय न देकर उल्टे उसे पच्चीस रुपये दंड करती है। अपमानित " चन्दा लौटकर पीने लगा और बकने लगा - बेटा कन्हाई, छिनाल तो छिनाल ही रहेगी। कुत्ते की पूंछ क्या सीधी हुई है ? तेरी बहार भी कै दिन की है ? बेटा अब गिरस्ती पड़ी है ,अब दो दिन बाद तेरे भी खरचे देखूंगा। हाथ - पांव ढीले हो जाएंगे, पर मैं करूंगा मजे बेटा। चटाने को तो मेरे पास भी पैसे हो जाएंगे, समझा ? भगवान समझेगा तुमसे, पापी। [२] यहाँ लेखकने पात्र चन्दा के मन की जलन अर्थात भाव - पक्ष को विकसित किया है।

" प्रवासी " शीर्षक का पुजारी गोपालन सुन्दरी कोमल को देखता है। उसके यौवन देखकर उदास जीवन आशाओं को ठोकर मारकर जीने की चेष्टा करता है, जिसकी पीडा से एक दिन आँखें खोलती हैं। ऐसा ही मन जब भावों से घिरा तब " सोचने लगा वह, आज जब कोई साथी नहीं हैं, तब गोपालन की याद आई हैं। किन्तु मैं तो एक दरिद्र अर्चक हूँ। वह तो धनी घर में पली है। रुपया पानी की तरह बहा सकती है। वह क्यों मेरी प्रतीक्षा कर रही है ? - और उसको शांति - सी अनुभव हुई। - आज वह विधवा है। आज वह किसी काम की नहीं है। आज समाज में उसका कोई स्थान नहीं है। दो दिन बाद पुष्करिणी में नहाकर गले में गीला आंचल डालकर आएगी, तब देखूंगा उसका गर्व। जब ब्राम्हण अपने हाथों से उसके गले का तिरमंगल्यम तोडकर फेंक देंगे। जब उसका यौवन सिर धुन-धुनकर सुहाग के लिए तडपेगा, तब देखूंगा उसकी शेखी। वह पागलों की तरह हंस उठा। और स्वयं वह ? उसके होठों पर घृणा की हंसी सर्पिणी की तरह तडप उठी। क्या है गोपालन ? कुछ नहीं। निरी मिट्ठी।

इस द्वंद्वने उसे पराजित कर दिया। वह छत की ओर देखकर एक बार मन ही मन कांप उठा। [३] मेरी राय के अनुसार लेखकने यौवन संघर्ष का चित्रण सौंदर्य को जीवन्त रखने हेतु सदैव लालसा रखी है।

" घिसटता कम्बल " निम्नमध्यवर्ग के जीवन की एक कहानी है। लेखक का पात्र " विपिन देखता है, कितना क्षुद्र है वह। संसार में अनेक कार्य है, अनेक - अनेक महापुरुष हैं, अनेक अनेक शक्तियाँ है, किन्तु वह कहीं भी कुछ नहीं हैं। उसकी असमर्थता ऐसी है जैसे टूटे हुए गिलास के शीशे के टुकडे। वह केवल घिसटता चला जा रहा है। [४] यहाँ लेखकने विपिन के मन में भावों को गिलास शीशे के टुकडों के समान बिखर दिया है। क्योंकि लेखक का विपिन धन ही सुखों का मोल नहीं समझता। वह प्रेम ही जीवन का बडा भारी आधार समझता है। जैसा कि - " विपिनने कहा तुम चाहती हो, धन ही हमारे सुखों का मोल है ? नही रागिनी। प्रेम ही हमारे जीवन की सांत्वना है, एक बडा भारी आधार है। यदि मैं इस दु:खी संसार में तुमसे छूट जाऊं तो तुम समझती हो मैं यह अपमान का जीवन बिता सकूंगा ?[५] मेरी राय के अनुसार जीवन निबाहते समय प्रेम और धन को हम आधार मान सकते है। धन की सहायता के बिना प्रेम का आधार कैसा ? आगे वे कहते हैं - " कि जीवन उठाकर नहीं फेंका जा सकता - जैसा है, वैसा ही निबाहना भी पडता है। [६] यह मुझे गलत लगता है। क्योंकि कोशिश करनेवाला कुछ परिवर्तन ला सकता है, न कि असमर्थता बना रहाता है लेखकने यहाँ पात्र के भाव - पंक्षों का विकास सर्वांग से नही किया

" गूंगे " कहानी में एक गूंगे और बहरे का चित्रण है। वह अनाथ और असहाय है। वह बोलने का प्रयत्न करता है, पर उसका गूंगापन उसकी भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त होने नहीं देता। उसका दिल अपनी बात को कहने के लिए तडप तडपकर रह जाता है। जैसे - " और चमेली सोचती है, आज दिन ऐसा कौन है जो गूंगा नहीं है। किसका हृदय समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्ति के प्रति विद्वेष से, घृणा से नहीं छटपटता, किन्तू फिर भी कृत्रिम सुख की छलना अपने जालों में उसे नहीं फाँस देती - क्योंकि वह स्नेह चाहता है समानता चाहता है। [७] मेरे विचारों

के अनुसार लेखकने व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण राष्ट्रों के भाव - पक्षों को चमेली और गूंगे पात्र - चित्रण में सजगता पाल रखी है।

" धर्म- संकट " इस शीर्षक में पति-पुत्र के बीच एक नारी है, जो नाते से पति की पत्नी है, पुत्र की माँ है। पिता - पुत्र दोनों नशा करते हैं। पिता शराब का नशा करता हैं पुत्र भांग का। नशे में दोनों भी अपने अपने सुख के लिए झगडते हैं। उस नारी के लिए समस्या खडी हो जाती है कि वह किसका पक्ष ले ? पति या पुत्र का। अन्त में वह पुत्र का पक्ष लेती है। जैसे - " उसने क्रोध से जलती हुई आँखों से देखकर कहाँ - तुम चले जाओ। अभी घर से निकल जाओ। तुम मेरी गोद में आग लगाना चाहते थे ? जिसे मैंने इतने दिन तक अपनी कोख में रखा, उसे तुम मार डालना चाहते थे ?[८] मेरे विचारानुसार लेखकने " धर्म - संकट " में एक प्रश्न उपस्थित किया है। प्रश्न यह है - यह पति का पक्ष ले या पुत्र का पक्ष ले ? लेखक यहाँ भावपक्षों में सफल हुआ है।

रांगेय राघव का " फूल का जीवन " भी भावों के द्वंद्व का एक प्रतीक बन गया है। अब मानव की मान्यताएँ बदल रही है। वह कुछ परिवर्तन चाहता है। धनी और दरिद्र के भेदों को संस्कृति के दोस जगहो पर रखता है। इसलिए एक और समाज की मजबूरी तो दुसरी और संस्कृति की व्यथा कथा स्वार्थभाव है। ऐसा लगा हैं कि लेखक अपने लेखन की गर्जना सुनाकर फूल के जीवन से अन्याय - अव्यवस्था को मिटाना चाहते है। जैसे - " विक्षोभ से मेरा मन भर गया। समझ नहीं सका कि यह संसार किधर जा रहा है। क्यों नहीं हम उन्हीं शाश्वत भावनाओं को अपना सब कुछ मान लेते ?[९] यहाँ लेखकने शाश्वत भावनाओं का चित्र साकार किया है।

" नई जिन्दगी के लिए " में मन को छूनेवाली तडपन है, मन को विचलित करनेवाली संवेदना लिखो गयी है। इसमें सामाजिक परतंत्रता की वृद्धावस्था को स्पष्ट किया है। मेरे मत के अनुसार स्त्री- पुरुषोंने लडकी

से नही, लडके से ही महत्व दिया है। जैसे - " माँ से बाबूजी को एक दिन रात की बात मैंने सुन ली। बाबूजी कह रहे थे - अगर तुझ जैसी अभागिन मेरे घर न आती तो क्यों मेरी जिन्दगी हराम होती। अब वह बुढिया तो जिन्दा नहीं हैं, जिसने पहली दो बहुए मरने पर हाथ हाय करके खा डाला था कि बेटा। ब्याह कर। बना घर का दीप बुझा जाता है। अब जल रहे हैं न चिराग ? दिन में भी नहीं बुझते। [१०] इसमें लेखकने पात्र - बाबूजी के मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से पेश किया है।

" गदल " में समाज - संस्कार तथा संस्कृति मूल में है। इसके साथ गदल स्पष्टवादी, दृढ, फुर्तीली, धैर्यवान ममतालु भी है। लेखकने गदल में त्याग, प्रेम तथा दया की भावनाओं को उजागर किया है। स्वयं लेखक का कथन हैं -"गदल ग्राम - जीवन का एक चित्र है। गांव में गूजरों का समाज अपनी अलग रीतियाँ निबाहता है। किन्तू गदल केवल उस बाहय का ही चित्रण नही हैं, उसमें एक स्त्री का हृदय बोलता है, और शायद इसी यथार्थ ने भूमि बनाई। मैं भावपक्ष का अनुरागी हूँ, मनुष्य ढूंढता हूँ - यह भूमि पर बंधे नींव खुदी, और चरित्र को व्यवस्था में से उपर लाने का पक्षपाती हूँ - यही इसकी इमारत बन गई। बस इतनी - सी है यह गदल की कहानी। "

३] रांगेय राघव के प्रिय कहानी-साहित्य में विविध भाव-पक्ष :-

डॉ. रांगेय राघव बडे सौभाग्यशाली लेखक हैं। अत : भाववर्णन में उन्हें सफलता मिली है। भाव - चित्रण क्षमता में जिस विचार शक्ति का उपयोग होता है, वही लेखक में अधिक हैं। कारण कि अनेक प्रिय कहानी-साहित्य में विविध भाव - पक्षों के दर्शन होते हैं। उसकी संक्षेप में मीमांसा निम्नानुसार है -

१] सामाजिक पक्ष :-

डॉ. रांगेय राघव की कुछ कहानियाँ विशेष लगती है। उनकी

" कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " में समाज के प्रतिनिधी मर्मभाव स्मों को शब्दों में गुंथकर उजागर करती है।

डॉ. रांगेय राघवने हिन्दी में मन के पक्ष को लेकर पंच म परमेश्वर का अपना स्थान माना है। क्योंकि मनुष्य आखिर मनुष्य ही रहाता है। यह प्रिय कृति सामाजिक पक्षं को लेकर आगे चल रही है।

लेखक ने " घिसटता कम्बल " की विवशता में निम्नमध्यवर्ग के जीवन की तस्वीर को रेखाबद किया है। इसमें सामाजिक पक्ष का चित्र स्पष्ट है।

उन्होंने तुलनात्मक शैली में भीतरी जीवन और बाह्य वातावरण का चित्र भी खिंचा है। फूल का जीवन गरीब और अमीर यह द्वंद्व भाव स्पष्ट करता है।

" नई जिन्दगी के लिए " एक अद्भुत कृति है। इसमें पुरुष और स्त्री को लेकर सामाजिक विषमता का द्वंद पेश किया गया है।

" गदल " में सामाजिक पक्ष का बाह्य चित्रण नही है। उसमें एक स्त्री का हृदय बोलता है। जैसे ममता, त्याग, क्रोध आदि का हृदयसंग्म दिखाई देता है।

२] पारिवारिक पक्ष :-

प्रिय कहानी संकलन की प्रमुख विशेषता सुन्दर और सफल पारिवारिक पक्ष उपस्थित करना है। लेखक के पारिवारिक पात्र -चित्रण भाव - पक्ष के प्रतीक बन गये है। इसके पात्र अपने भीतरी रंग - ढंग मनोभावों से व्यक्त करते है।

" पंच परमेश्वर " में कन्हाई चन्दा भाई- भाई है,

पति-पत्नि और पंच तथा अन्य पारिवारिक सम्बधों की ओर देखने योग्य मनोभावों का पक्ष है।

" घिसटता कम्बल " में विपिन - रागिनी पति पत्नि है। यह सृजन व्यंग्यपूर्ण हैं। इसमें लेखक व्यंग्य की ओर पाठकों को पारिवारिक पक्ष में आकर्षित कराते हैं।

" धर्म-सकंट " में पति- पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र का संबन्ध देखने योग्य हैं। धर्म - संकट एक त्रिकोण हैं। पिता-पुत्र क्रमशः : शराब - भांग पिकर संघर्ष करते रहते हैं, और बीच में वह नारी अपने भाव-पक्ष को प्रकट करती है।

" नई जिन्दगी के लिए " के पारिवार में ऐसा लगता है जैसे कोलाहल चल रहा है। इसमें तीन बच्चेवाली नारीने आपने पिछले पन्द्रह साल उमर की सामाजिक परतंत्रता के द्वंद्वाभावों को पेश किया है। इसमें माता-पुत्रियाँ, पिता- पुत्रियाँ, पति- पत्नी तथा अन्य रिश्तेदारों की मनोवेदना प्रस्तुत है।

" गदल " भाव - पक्ष में चरित्र की विशिष्टता लाई हुई कहानी है। इसमें मुन्ना तथा डोडी का परिवार, मौनी का परिवार माता-पुत्र आदि के भाव - धन का लेखकने सजीव - सा बना दिया है।

२] ~~धार्मक~~ धार्मिक पक्ष ****

लेखकने अन्य भाव- पक्षों के साथ धार्मिक पक्ष को भी बडे कौशल्य से शब्दांकित किया है। उपनी ऐतिहासीक काहानियों में उन्होंने उत्तर और दक्षिण के धार्मिक जीवन के सम्बन्धों को प्रकट किया है। जैसे - " प्रवासी " में गुरु - शिष्य परम्परा, मठ, धर्मशाला, पिता-पुत्री, कोमल - गोपालन प्रेमलालसा, आदि का वर्णन किया है। इसमें धार्मिक भावनाओं का कथन मौलिक और भाव स्पर्शी पूर्ण लगता है।

" धर्म - संकट " की मीमांसा में उन्होंने एक परम्परा की मर्यादा को लेकर संघर्ष को उजागर किया है। इसप्रकार पति और बेटे के बीच में एक

के बीच में एक स्त्री है, कि जिनकी भावनाओं का त्रिकोण " धर्म-संकट " बन पडा है।

४] मनोवैज्ञानिक पक्ष :-

लेखक की प्रिय कहानी में मनोवैज्ञानिक तथ्यों का भी उपयोग किया गया है। उनकी कहानी "गूंगे " मन ही मन अपने किये हुए मामले पर मानसिक पछतावा करने में सफल है। संक्षिप में उनकी मनौवैज्ञानिक कहानियाँ व्यक्ति की मानसिक समस्योओं का सामाजिक सन्दर्थ में उद्घाटन करती प्रतीत होती हैं।

४] रांगेय राघव के प्रिय कहानी- साहित्य में भावानुभूति और रसात्मकता :-

" मेरी प्रिय कहानियाँ के " लेखक डॉ. रांगेय राघवजीने अनुभूति - पूर्ण मार्मिक भाव - सौन्दर्य को पहचाना है। प्रिय कहानियों की कथावस्तु के बीच में अनुभूति की रसात्मक अभिव्यक्ति कराने में उन्हें सफलता मिली है। इस लघु - प्रबन्ध के आवश्यकता के अनुसार मैं कुल मौलिक रसों पर दृष्टिकोण डालना उचित समझता हूँ।

१] शृंगार रस :-

" प्रवासी " में नायक गोपालन रिटायर्ड पोस्टमास्टर की पुत्री कोमल के यौवन को देखकर मुग्ध हो जाता है। वह कोमल को अधीश्वरी मानता था। स्वामीने पीडा का हाल पूछने पर " गोपालने दबे स्वर सें कहा मैंने आकाश की ओर हाथ बढाया था। मैंने सोचा था कि कोमल से विवाह कर सकूंगा। मैं समझता था कि वह मुझसे प्रेम [illegible] करती है।[१२] यह पंक्तियाँ यह संकेत करती हैं कि गोपालन कोमल के प्रेम- वियोग में अस्थिर हो रहा है। इस वर्णन में लेखकने बडे कौशल से अश्लिलता से बचने का प्रयास किया है।

" घिसटता कम्बल " में भी लेखकने रागिनी और विपिन जैसे से प्रेम- भावों का ही संकेत दिया है। विपिन ने कहा - तुम चाहती हों, धन ही हमारे सुखों का मोल है ? नहीं रागिणी। प्रेम ही हमारे हमारे जीवन की तात्त्वना है, एक बडा भारी आधार है। [१३]

लेखकने विविध तरह से श्रृगांर रस को साकार किया है। उन्होंने " गूगे"- इस प्रिय कहानी में भी अलग ढंग से माँ के प्रेम को सजीव बनाया है। जैसे - " मुझे तो दया आती हैं बेचारे पर, " चमेलीने उत्तर दिया - न हो बच्चों की तबीयत बहलेगी। [१४] लेखकने यहाँ नारी के ममता को मर्मस्पर्शी बनाया है। जिससे श्रृंगार भाव प्रकट होता हैं।

" धर्म - संकट " जैसे प्रिय कहानी में लेखकने पति और पुत्र के बीच में एक स्त्री के मनोभावों को स्पष्ट किया है। जब पति-पुत्र का संघर्ष सीमाहीन होता है, और पुत्र के सीर से खून टपकता है, तब माता का हृदय जागृत होता है। - " और उसने पुचकारकर कहा - उठो बेटा, अब हम इस घर में नहीं रहेंगे। वह दुकान इसी की रहें , देखें कैसे चला लेता है। हम तुम मेहनत करके पेट पाल लेंगे .....।[१५] यहाँ स्त्री अपने बेटे पर ममता रखती है, और अपने पति पर क्रोधित हुई है। इसी कारण श्रृंगार का यह सांकेतिक वर्णन रौद्र- रस को उद्दीपन करने में सहाय्यक है।

लेखकने " गदल " शीर्षक को गदल ही बना दिया है। गदल पति मरने पर देवर डोडी से प्रेम करती है। लेकिन डोडी डरता है। एक दिन प्रेम - भाव- सौन्दर्य को प्रकट करते हुए गदलने कहा - " कायर। भैंया तेरा मरा, कारज किया बेटे ने और फिर जब सब हो गया, तब तू मुझे रखकर घर नहीं बसा सकता था। तुने मुझे पेट के लिए पराई डयेंढी लंघवाई। चुल्हा मैं तब फूंकू, जब मेरा कोई अपना हों। [१६] लेखकने "गदल" में प्रेम , त्याग, तथा दया की भावनाओं को उजागर किया है। साथ ही वे स्त्री - पुरुष के यौन सम्बन्धों को सीमित दायरों मे रखकर उसके नग्नता

का विरोध करते है। यहाँ श्रृगांर रस में गद्दल का पूज्य प्रेम- भाव प्रभाव डालता है।

२] करूण रस :-
==========

डॉ. रांगेय राधव की प्रिय कहानियों में करून रस प्रभावशाली दिखाई देता है। सचमुच पाठकों के हृदय में करूण भाव उत्पन्न होता हैं।

" पंच परमेश्वर " कहानी में चन्दा कन्हाई के पैर पकडकर रोने लगा और कहने लगा - " मेरी लाज तो तुम्हारे हाथ हैं भैया। पार लगाओ, डुबा दो। घर तो तुम्हारा, मैं तो तुम्हारा गधा। कान पकड के चाहे इधर कर दो चाहे उधर ,पर वह तो बेचारी मर गई ....। [१७] इन पंक्तियों में हृदय को भीतर से करूणामय सागर में डुबानेवाला करूण रस प्रकट होता है।

" प्रवासी " प्रिय कहानी भी ऐसी ही हैं, जो घटना देखकर करूण भावना उमड आती है और बहुत दु:ख पहुँचता है। जैसे - " वृध्द घर पहुँचते ही शय्या पर जा लेटा, और जाने क्यों इतना अशक्त हो गया कि उठ नहीं सका। तीसरे दिन जब राजम, गोपालन घर पर नहीं थे, हाथ - पैर फेंककरवह अपने विश्वासों पर बलि हो गया, मर गया। [१८] इसमें लेखकने वृध्द , घर, शय्या, तीसरे दिन आदि का संकेत दिया है। इसप्रकार घटना और करूण रस साकार हो चुका है।

" गूंगे " इस कहानी में जीवन में दु: ख कितना सत्य है, दिखाई देता है। उन्होंने इसमें मनुष्य की करूण की भावना को उजाला दिया है। उनकी साकार लेखनी संकेत से कहती है कि - "मुंह के आगे इशारा करके गूंगे ने बताया - भाग गई। कौन ? फिर समझ में आया। जब छोटा ही था तब " माँ " जो घूघंट काढती थी, छोड गई। क्योंकि " बाप " अर्थात बडी - बडी मूछे ,मर गया था। और फिर उसे पाला है किसने ? यह तो समझ में नही आया, पर वे लोग मारते बहुत हैं। [१९]

यहाँ सब के हृदय को करुणाने झकझोर दिया है।

रांगेय राघव के प्रिय कहानी संकलन में युग - युग का करुण रस अनेक रचना में शब्दबध्द हुआ है। वे " धर्म - संकट " के पात्र के द्वारा संकेत देते हैं कि - " माँ को दु:ख हुआ। वह यह न सुनना चाहती थी। जैसे आज उसका हृदय दो टूक हो जाएगा। यह वह क्या सुन रही है। घर की पुरानी दीवार आज उसके देखते - देखते चटक रही है। मन में संसा की विष सबसे बुरा है।[२०] पति - पुत्र का सीमाहीन संघर्ष देखकर इस नारी को बहुत दु: ख होता है। वह द्वंद्वभावों मे सोचती रहती है। जैसे प्रत्येक नारी के हृदय रूपी सागर में करुण रस की बाढ आती है।

डॉ. रांगेय राघव की " और एक नायिका पक्षीय कहानी है - " नई जिन्दगी के लिए। " इसमें करुण रस की व्यंजना है। उदा. " मै कभी भीतर जाती, कभी बाहर। मेरा दिमाग बिलकुल बेकार सा हो गया था। दाई ने मुझे देखा तो कहा - जा बेटी। थोडी देर जाकर सो रह। तुझे इतनी मेहनत की क्या जरूरत है। जब जरूरत होगी जगा लूंगी।[२१] मेरी राय के अनुसार उस दाईने उस नायिका, पक्ष के बारे में करुणामयी ममता दिखाई दी है। और यह भी स्पष्ट होता है कि वह दाई अच्छाईयों और बुराईयों को पहचानती हैं। यहाँ लेखक की लेखनी तेज बन गई है।

" गदल " हिन्दी - कथा साहित्य की अत्यन्त प्रसिध्द और प्रिय कहानी है। गदल में प्रेम तथा दया की भावना पेश की है। गदल में भी तरी नारी हृदय है। इसलिए डोडी की मृत्यू हो जाने पर सिसकी भरने तक रोती है। जैसे - " गदल भीतर रोने लगी, परन्तु इतने धीरे कि उसकी सिसकी तक मौनी नहीं सुन सका। आज गदल का मन बहाजा रहा था।[२२] " यहाँ दल को डोडी के प्रति करुणामयी भावनाशक्ती प्रकट हुई है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गदल में रस - निरूपण की सांकेतिक शैली बडी सफल मर्मस्पर्शी और सुन्द बन पडी है।

३] हास्य रस :-

डॉ. रांगेय राघव के प्रिय संकलन में अन्य रसों की तरह हास्य रस भी प्रभावित हो चुका है। उसके साथ - साथ हास्य का विकृत रूप भी कुछ कहानियों में प्रकट है। जैसे - " चंचलने सिगरेट का धुआँ एक बार आकाश की ओर छोडा और कहाँ - तुम जा सकती हो। जब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा तब तक मेरी कला मेरा साथ न देगी। मै आज तक विश्वास के बल पर जीता रहा हूँ सुषमा। मुझे अपनीस रिक्ति से बढकर प्यारा कुछ नही है। [२३] मुझे इसमें तिक्त व्यंग दिखाई देता है। इस कहानी के मन्तव्य में लेखक कहते हैं - " पर असल में मेरा उद्देश व्यंग्य नही स्नेह का सृजन है. [२४] यह मुझे गलत लगता है। सच है, यहाँ हास्य विकृत रूप है।

" पंच परमेश्वर " में वे कहते हैं " " उधर कुंजो और अनेक स्त्रियों में ठिठोली में हो रही थी। लजमंतीने कहा - ऐ भैना, एक आँख का कर बैठी। दो आँखों से ऐसी क्या दुसमनी निकली ?

" कलदार की ठसक है बेटी, कलदार की, " चम्पीने कहा और हाथ मटकाए। कुंजो अपने ग्यारहवें बच्चे को बैठी दूध पिला रही थी जो अपने सबसे बडे भाई से लगभग सत्ताइस बरस छोटा था। बैठे ही बैठे मुस्कराई और गा उठी - जैसे देवरिया मलूक तैसे होते बालमाउ .....। [२५] लेखकने कुंजो, चम्पी आदि पात्रों के माध्यम से हंसी " परिहास के इस व्यापार में एक कौतुहल, एक ईर्षा को अभिव्यंजना पेशxxx की है। पाठक इसी हास्य-व्यंग्य की ओर शीघ्र ही आकर्षित होता हैं। हास्य रस से यह प्रिय कहानी सजीव बन पडी है।

लेखकने यह एक अजीब सी कहानी लिखी है। इसमें हास्य-भाव कम और व्यंग्य की तानातानी गहरी दिखाई देती है। वह इसप्रकार है - " मेरे भाई, दो आदमी के आठ और आठ सोलह ही तो हूएँ ? [२६]

इस पंक्ति में जो हँसी हैं वह व्यंग्य हैं। " घिसटता कम्बल " में ऐसा व्यंग्य हैं, जो पात्रों को लेकर सम्पूर्ण समाज की ओर संकत करता है।

लेखक के प्रिय कहानी - साहित्य में भावपक्ष में अनेक घटना - प्रसंग और पात्र पाठकों के मनाभावों को हास्यमय बनाते हैं। " गूंगे " में एक प्रसंग ऐसा है कि - " बालिकाने एक बार कहनेवाली की ओर द्वेष से देखा और चिल्ला उटी - दूं दे।

गूंगे ने नही सूना। तमाम स्त्रियाँ खिलखिलाकर हंस पडी। बालिकोने मुँह छिपा लिया। [२७] इससे यह स्पष्ट होता हैं कि " दूंदे " इस। शब्द से हास्यभाव पैदा होता है। यहाँ लेखकने बालिका के ध्वनि से गूंगे को प्रभावित किया और पात्रों के भाव- शिल्पों का कौशल्य दिखा दिया है।

"धर्म- संकट " में व्यंग्यात्मक हास्य है। देखिए - " आहा, " हरदेव ने सिर हिलाकर व्यंग्य से कहा - एक यही सपूत तो मेरी इज्जत करने को रह गया है। मेरी पांव की जूती मेरे सिर की इज्जत करेगी ? मुझें नहीं चाहिए ऐसी इज्जत। [२८] यहाँ निंरतर चलनेवाला मानव के परिवार का कचोट ता व्यंग्य - हास्य पेश किया है।

अब यह " फूल का जीवन " देखिए नं। लेखकने जो पूरी सजगता से लिखा है। उनकी तेज लेखनी कहती है - " रामचरण बूरा रख गया। नीना चाय बनाने लगी। सेठजी ने कहा - जब राष्ट्रिय सरकार होगी तब यह तकलिफे नही होंगी। और एक भारी हास्य प्यालों की चाय पर झनझना उठा। [२९] उन्होंने सेठजीद्वारा राष्ट्रीय विषय को पेश करते हुए भीतरी हास्य के भावपक्षों को साकार बना दिया हैं। चाय की रुचिके समान पाठकों के मन में भी रुचिली मनोभावनाएँ प्रकट होती हैं। यहाँ उपरोक्त " झनझना " शब्द हास्य - भाव पक्ष को बिजलीकी - सी गती देता है।

उन्होंने पुरुष और स्त्री को सामाजिक परतंत्रता का भाव - द्वंद बहूत

ही तीखे रूप में पेश किया है। जैसे - " शायद सामने की खिडकी में बैठे हुए लडके ने मेरी बात सुन ली, क्योंकी वह हंस रहा था। मुझे बसलाज लगी, हालांकि बात कोई नहीं हुई थी। मैने झट से दरवाजा बन्द कर लिया और भीतर आ बैठी। [30] यहाँ लडके की हंसी नायिका पक्ष को ही नहीं, सम्पूर्ण युग - युग के मानव जीवन के हृदय को आघात पहूँचाती है। यहाँ व्यंग्यात्मक हंसी प्रकट हुई है।

डॉ. रांगेय राधव की कुछ प्रिय कहानियों में पाठकों के मन रोंगटे खडी करनेवाली हँसी भी है, और उसके साथ साथ प्रभावशाली पात्र भी उनके प्रसिध्द और प्रिय कहानी " गदल " में ऐसी ही विचित्र हास्य-भाव प्रस्तुत हुआ है। उदा. " गलने घोडा दबाया। कोई चिल्लाकर गिरा। वह हंसी । विकराल हास्य उस अन्धकार में गूंज उठा। [31]

४] वीर रस :-

भाव - पक्ष के अन्तर्गत रस योजना के बात की ओर स्वंय डॉ. रांगेय राधवजीने स्पष्ट संकेत किया हैं। उनकी कुछ प्रिय कहानियों में वीर- रस भी दिखाईदेता है। " वीर - रस " का स्थायी भाव उत्साह होता हैं।

डॉ. रांगेय राधव की अत्यन्त प्रसिध्द और प्रिय कहानी " गदल " में वीर - भाव प्रकट हुआ हैं। वह इस प्रकार कि - " गदल ने एक बन्दूकवाले से भरी बन्दूक लेकर कहा -चले जाओ सब, निकल जाओ।[32] गदल स्त्री होकर भी पुलिस के जवानों के साथ युध्द करती थी। उसमें साहस, त्याग, और क्रोध है, बदले की भावना है। उनका " क्रोध " स्थायी भाव " उत्साह " में परिवर्तित हो जाता है। इसप्रकार " गदल " में वीर- रस लाने में लेखक सफल बन गया है।

// नि ष्क र्ष //

मैंने इस लघु - अध्याय के आधार पर निम्नानुसार निष्कर्ष

पेश करने का प्रयास किया है।

१] मैंने डॉ. रांगेय राघव के प्रिय कहानी- संकलन के द्वारा उनकी प्रिय कहानी के भाव पक्षों को पाठकों के सामने रखकर कहानी का महत्त्व पेश करने का प्रयास किया है।

२] मैंने उनके विषय - वस्तु पर दृष्टिकोण डाला है, उसमें संक्षेप में प्रिय कृति की जानकारी दी है।

३] मैंने उनके प्रिय कृति संकलन के द्वारा भावद्वंदो का विश्लेषन करने की कोशिश की है। साथ ही पात्रो के संघर्षमयी छटाओं के मौलिक उदाहरण भी देने का प्रयास किया है।

४] मैंने इसके द्वारा मर्यादा का ध्यान रखकर उनके विविध भावपक्षों को संक्षेप में स्पष्ट किया है। जैसे कि - पारिवारिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, मनोवैज्ञानिक पक्ष का शब्द रेखाटन किया है। इससे मेरा हेतू है कि पाठक थोडे समय में लेखक के कृति को इससे समझ सकें।

५] मैंने प्रिय संकलन की सहाय्यता से भावानुभूति और रसात्मकता का उद्घाटन करने का प्रयास किया है। जैसे कि - श्रृंगार रस, करुण रस, हास्य रस, वीर रस, आदि की मीमांसा की है। इसमें अन्य रस भी जरूर होंगे। लेकिन मैंने मौलिक रसों को चुनकर उदाहरण सहित इसमें समाविष्ट किया है।

****

// अ ध्या य - चौ था //

सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची :-

क्रम — पुस्तक का नाम और पृष्ठ क्रम ।

१] मेरी प्रिय कहानियाँ - रांगेय राघव - कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स । शीर्षक वाली - " इस कहानी के सम्बन्ध में " से प्राप्त, पृ॰ ११

२] वही, "पंच परमेश्वर " इस शीर्षक में से प्राप्त , पृ॰ ४७

३] वही, "प्रवासी " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ ६४

४] वही, " घिसटता कम्बल " इस शीर्षक में से प्राप्त ,पृ॰ ८१

५] वही, पृ॰ ८२

६] वही, स्वंय लेखक का मन्तव्य " इस कहानी के सम्बन्ध में " से प्राप्त, पृ॰ ७८

७] वही, " गूंगे [" इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ ९१

८] वही, " धर्म - संकट " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ १०२

९] वही, " फूल का जीवन " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ १०६

१०] वही, " नई जिन्दगी के लिए " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ १२०-२१

११] वही, लेखक के " इस कहानी के सम्बन्ध में " से प्राप्त, पृ॰ १२३

१२] वही, " प्रवासी " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ ५७

१३] वही, " घिसटता कम्बल " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ ८२

१४] वही, " गूंगे " इस शीर्षक मे से प्राप्त, पृ॰ ८८

१५] वही, " धर्म-संकट " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ॰ १०२

१६] वही, " गदल " इस शीर्षक में से प्राप्त , पृ १२८

१७] वही, " पंच परमेश्वर " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ. ३०

१८] वही, " प्रवासी " इस शीर्षक में से प्राप्त , ७२

१९] वही, " गूंगे " इस शिर्षक में से प्राप्त, पृ ८५

२०] वही, " धर्म - संकट " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ ९६

२१] वही, "नई जिन्दगी के लिए " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ. १२१

२२] वही, " गदल " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ १३५

२३] वही, " कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ १४

२४] वही, लेखक के " इस कहानी सम्बन्ध " में से प्राप्त, पृ. ११-१२

२५] वही, " पंच परमेश्वर " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ ४३

२६] वही, " घिसटता कम्बल " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ ८२

२७] वही, " गूंगे " इस शीर्षक में से प्राप्त , पृ. ८६

२८] वही, "धर्म - संकट " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ. १००

२९] वही, " फूल का जीवन " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ १११

३०] वही, " नई जिन्दगी के लिए " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ. ११८

३१] वही, " गदल " इस शीर्षक में से प्राप्त, पृ. १४०

३२] वही, पृ. १४०

-**********-